Chapter-8

अध्याय : ८ :

उपसंहार

ललित निबंध आधुनिक युग की देन है । आज वह एक स्व-स्थापित विधा के रूप में पूरी तरह मान्यता प्राप्त कर चुका है । यह निबंध विधा अपनी भावसंपत्ति, विलक्षण विचार गरिमा तथा ज्ञान-विज्ञान के सूत्रों पर हास्य-व्यंग्य के पुट से युक्त भाषा के सौन्दर्य से अभिमंडित होकर कुछ इठलाहटमय प्रवाह के द्वारा रचना के लालित्य को उभारती है । निबंध कला का वास्तविक विकास, निखार तथा उत्कर्ष ऐसे ही निबंधों में पाया जाता है । इनमें लेखक की वैयक्तिकता की प्रधानता रहती है। 'वैसे देखा जाए तो इन व्यक्तिपरक निबंधों का प्रारम्भ भारतेन्दु युग में ही हो गया था जिनमें संस्कृति, साहित्य, लोकजीवन और भारतीय दर्शन को विशिष्ट शैली में प्रस्तुत किया गया है । ललित निबंध किसी भी विषय या विचार बिन्दु को लेकर लिखे जा सकते हैं । लेखक के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग इन निबंधों में रहता है। यह गौरव की बात है कि हिन्दी में अल्पावधि में ही निबंध का जैसा विकास हुआ वैसा अन्य किसी विधा का नहीं। आधुनिक युग में वैयक्तिकता के संस्पर्श से निबंध ने एक साहित्यिक विधा का स्वरूप अर्जित कर लिया है । ऐसे ललित निबंधों में विशेषतया निबंधकार का निजी व्यक्तित्व एवं उसके विचार,मान्यताएं आदि उसके स्वयं के साथ विद्यमान रहते हैं जिनसे लगता है कि निबंधकार अपनी रचना में आदि से अन्त तक विद्यमान है । ~~वस्तु-जग~~ वस्तु और व्यक्ति की विरल रुचि और अरुचि से इंगित अनुभव की परिपक्वता और असंगतियों की पकड़ रखनेवाली विनोद रसिक बुद्धि ललित निबंधकार के लिए आवश्यक है । तथा हास्य और व्यंग्य भरे व्यक्तित्व का प्राधान्य ललित निबंध की विशेषता है । ऐसे निबंध रूप में बौद्धिकता के स्थान पर भावुकता और व्यंग्य की प्रधानता लक्षित होती है तथा व्यक्ति निष्ठता का सौन्दर्य निखरता हुआ दिखाई देता है । डा० विद्यानिवास मिश्र जी के अनुसार ललित निबंध भी निस्संग फक्कड़पन के साथ-साथ आसपास के जीवन में गहरी संपृक्तता, भाषा के सभी धरातलों पर उसकी संभावनाओं की खोज, नयी भाषा की रचना का उत्साह तथा आधुनिक बोध जो सम-सामयिक चेतना को ~~कालातीत~~ कालातीत चेतना के साथ जोडने का संकल्प लेकर उपस्थित होता है। अखण्ड

विश्व दृष्टि तथा सामान्य में निगूढ़तम वैशिष्ट्य की तलाश ललित निबंध का वैशिष्ट्य है। इन ललित निबंधों में चित्रित प्रकृति के सजीव चित्रण में प्रकृतिगत विशेषता दृष्टिगोचर होती है, इतना ही नहीं भावात्मकता, प्रवाहपूर्णता और बहुशास्त्रज्ञता भी लक्षित होती है। संस्मरण और रेखाचित्र भी अनेक दृष्टियों से इन ललित निबंधों के निकटवर्ती हैं। संस्मरण और रेखाचित्र लिखनेवाले लेखकों मे ने हिन्दी की ललित प्रसन्न शैली के अनेक उत्कृष्ट प्रयोग अपने निबंधों में किए हैं और तीखे व्यंग्य के आधार पर लालित्य की सृष्टि की है। ललित निबंध लेखन का प्रौढ़ एवं परिपक्वरूप हमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में देखने को मिलता है। कह सकते हैं कि पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा ललित निबंधों की जिस व्यवस्थित परम्परा का श्रीगणेश किया गया- उसके बीज भारतेन्दु मण्डल के निबंधकारों में दिखाई देते हैं। वे स्वयं साहित्य, दर्शन, ज्योतिष आदि अनेकानेक शास्त्रों के पंडित हैं, परन्तु न तो उनका शास्त्र उनकी बुद्धि को दबा सका है और न प्याज के छिलके उतारने वाली बुद्धि ही उनके महाप्राण हृदय के उच्छल प्रवाह को दबा सकी है। वे साहित्य के सम सुधी समालोचक है। अपने निबंधों में उन्होंने लोकदृष्टि से शास्त्र मत सत्य का मूल्यांकन किया है उनकी लोकदृष्टि को शास्त्रीय परम्परा का भी पूर्ण समर्थन प्राप्त है इसके अतिरिक्त अनेक आयामों में सत्य का साक्षात्कार करनेवाली दृष्टि की व्यापकता और अतल तक में डुबकी लगानेवाली गहराई भी इनके निबंधों में है। शास्त्रीयता के संयम संतुलन और परिपूर्णता के साथ लोक परम्परा की प्राणवत्ता और प्रवहमानता का उनमें अपूर्व सामंजस्य मिलता है। अधिकांश निबंधों में मानवतावादी विचारमन्थन का नवनीत है तथा वैयक्तिकता का संस्पर्श निबंध साहित्य की मूलभूत आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त उनके निबंधों में हृदय ही मस्तिष्क की भूमिका पर आकर बोलता है। सामान्यत: वैयक्तिक निबंधों का वातावरण काफी हाउस के समान होता है- जिसमें गंभीर से गंभीर विषय पर हल्के से हल्के तौर पर विचार किया जाता है परन्तु डा० हजारीप्रसाद जी के निबंधों में साधारण विषय को भी असाधारणता के धरातल पर

उठाया गया है । वैसे ही वैसे धरती पर चलते हुए वायुयान एकाएक अपने पहियों को उठाकर दोनों पंखों में आकाश के असीम विस्तार को बांधने के लिए उडान भरने लगता है । भाषाशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, भारतीय संस्कृति का इतिहास तथा संस्कृत साहित्य आदि अनेक विषयों से सम्बंन्धित सन्दर्भ उनके निबंधों में उल्लिखित होते हैं । नाखून की चर्चा करते हुए उनका ध्यान मनुष्य की पशुता के अवशेष की ओर चला जाता है । वे नाखून को भूलकर एटम की आलोचना करने लगते हैं और प्रकृति के साथ मानव के चिरकालिक संघर्ष की चर्चा करते हुए निबंध का उपसंहार करते हैं। इसी प्रकार वर्षा का वर्णन करते हुए भारतवर्ष में धर्म, साहित्य, शिल्प-संगीत और कला के संपूर्ण क्षेत्र का सर्वेक्षण करने लगते हैं। अनादिकाल से आज तक ज्ञान-विज्ञान की संपूर्ण साधना उनके लिए मानव की एक अद्भुत विजय यात्रा हैजिसकी प्रत्येक कड़ी एक दूसरी के साथ जुड़ी हुई है । आचार्य द्विवेदी जी विधिमुक्त,आत्मा-नुभूतिपरक शैली, गौरवमय पांडित्य एवं बहुमुखी प्रतिभा के साथ अपने निबंधों में प्रकट हुए हैं। सामान्य व्यावहारिक विषयों की चर्चा करते समय भी द्विवेदी जी अपनी विज्ञता का सदुपयोग करने के लिए अनेक प्रसंगों की सृष्टि कर लेते हैं। इनके निबंधों में भारतीय सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतिपादन स्पष्ट है । विभिन्न प्रसंगों एवं विषयों के अनुकूल शैली के प्रयोग के द्वारा ही द्विवेदी जी को अपनी बहुमुखी प्रतिभा व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ । उनके निबंधों में संस्कृत के उदाहरणों, अंगरेजी के शब्दों-फारसी के चलते प्रयोग तथा ग्रामीण शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। उनकी भाषा शैली विभिन्न प्रकारों में सम्बंधित है जैसे कि वर्णनात्मक, विचारात्मक,हास्य व्यंग्यात्मक, विवरणात्मक आदि । आत्मीयता, आदर्मीयत एवं समग्रता की दृष्टि से द्विवेदी जी के निबंध हिन्दी साहित्य में गौरव रूप हैं। यह वैयक्तिक निबंधों के क्षेत्र में सराहनीय प्रयास है ।

कुबेरनाथराय हिन्दी ललित निबंध के क्षेत्र का ऐसा नाम है जो अद्यतनयुग

में लेखन के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं उच्चस्तरीय व्यक्तिनिष्ठ निबंध के लिए प्रसिद्ध है। विश्वदर्शन, विश्व साहित्य और विश्व के महान चिंतकों के विभिन्न विचारों का प्रस्तुतीकरण उन्होंने अपने निबंधों में अनूठे ढंग से किया है। उनका निबंध लेखन अनेक दृष्टियों से बेजोड़ है तथा साफ-सुथरा विवेचन भी। उनके लेखन की विशिष्ट पहचान है जो अन्यत्र दुर्लभ है। निबंधों में कहीं-कहीं निबंधकार अपनी जन्मभूमि के परिवेश को उजागर करता है। साथ ही निषाद संस्कृति की ऐसी खोजपूर्ण जानकारी देता चलता है जो अन्यत्र दुर्लभ है। इनमें विचार सूत्रों को इतने सुव्यवस्थित ढंग से संग्रथित किया गया है कि उन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं कर सकते। इसके अतिरिक्त उनका एक-एक शब्द इतना नपातुला होता है कि एक शब्द भी निकाला नहीं जा सकता तथा भाषा की कसावट इतनी उचित व उत्कृष्ट कोटि की है कि एक शब्द हटा लेने पर वाक्य का समूचा महल ही हहराकर गिर जाय। कुबेरनाथ जी का सांस्कृतिक बोध आलोचक का और उल्लास निष्ठ है। इतना ही नहीं-उनकी प्रतिभा मिथक निर्माण से लेकर इन्द्रजलीय तथा आच्छादन और अर्थ गौरव से लेकर कसे हुए स्वच्छ और शास्त्रीय शब्द शिल्प तक समान रूप से सफल दीखती है। शैली कुछ ऐंठी हुई है और उस ऐंठन में प्रतीकों और रूपकों से अंतर्निर्मित एक प्रकार की नागरिक शोखी और शहरी नखरे की अदा है। उनके हृदय में अतीत के प्रति राग है। स्मृतियों के बहाने ऐसे पात्र भी आते जाते हैं जो अपनी सजीवता, कट्टर परम्परा, और युगधर्म के अवशिष्ट अवसाद के चलते पाठक को मुग्ध कर देते हैं। ऋतु परिवर्तन, वृक्षों की आत्माओं से प्रबुद्ध, वार्तालाप, महाभारत, पुराण दर्शन तथा संस्कृत साहित्य, यूरोपीय साहित्य आदि ऐसे उपकरण हैं जिनका उनके निबंधों में अधिकता से प्रयोग हुआ है। इसके अलावा बंगाल के वैष्णवभाव और शक्ति साधना के उल्लेख, मीमांसा और तत्सम्बंधी शास्त्रीय शब्दों का प्रयोग सर्वत्र मिलता है। लेखक अपने निबंधों में कई प्रयोगों को मिलाता है। पुराने प्रतीकों की व्याख्या भी करता है। कई प्रकार के रसों का विषम प्रपानक प्रस्तुत करना और साहित्येतर क्षेत्रों के शब्दों का प्रयोग करना, प्रतीकों का अन्वेषण करना और विद्रूप को साहस के साथ प्रदर्शित

करना उनके निबंधों की विशेषता है। कुबेरनाथराय के निबंधों में जो दृष्टि है वह चिंतनशील है। नये रसबोध की है तथा जटिल और गद्यकारिता की है । अपने निबंधों में वे प्रकृति का संवेदनात्मक चित्रण करते हैं और एक क के बाद दूसरे वातावरण का अंकन करते चले जाते हैं ऐसे निबंध में निबंधकार का बुद्धिजीवी, वैचारिक रूप सामने आता है। कई निबंधों के विषय पौराणिक संदर्भों पर आधारित भी है। जिनमें लोकवार्ता, लोकनाट्य और लोकसंस्कृति पर संक्षिप्त परिचय दिया गया है। वे दार्शनिक संदर्भों पर प्रकाश डालते हुए आज के भय और आतंक भरे वातावरण की मीमांसा करते हैं। अपने निबंध संग्रहों की भूमिका के रूप में कुछ बोध कथाएं भी प्रस्तुत की है और आगे ~~किए~~ दिए हुए निबंधों के साथ इन बोधकथाओंका तात्विक सम्बंध क्या है यह पाठक को प्रथम वाचन में ही स्पष्ट हो जाता है। इन बोधकथाओं में पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत किया गया है और अपनी जन्मभूमि का वर्णन भी किया है। इतना ही नहीं- निबंधकार ने संस्मरणात्मक पद्धति में गांव की कुछ घटनाओं का हवाला लेकर सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर किया है। समकालीन गतिविधियों की मीमांसा करते हुए अस्तित्ववादी दर्शन के भारतीय साहित्य पर पड़नेवाले प्रभाव की आलोचना अपने निबंधों में की है और अपने सौन्दर्यवादी दृष्टिकोण का भी परिचय दिया है। ज्योतिष परक ज्ञान का परिचय देते हुए ज्येष्ठ, अषाढ़ आदि विविध मासों के वातावरण का सजीव चित्र अंकित किये हैं। `पर्णमुकुट` प्रकृति के आसपास के परिवेश और सांस्कृतिक धरातल पर जन्मी आशा-आकांक्षाओं का दस्तावेज बनकर सामने आती है तथा वैदिक संस्कृति और वैदिक जीवन के विविध कोणों का उद्घाटन मिलता है । श्री कुबेरनाथ राय जी के निबंधों की विषय वस्तु से सम्बंधित उपयुक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त उनके निबंधों में अभिव्यंजना शिल्प से सम्बंधित भी अनेक विशेषताएं देखने को मिलती है जिनके कारण शैलीकारिता के क्षेत्र में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाए रखा है। उनकी भाषा प्रवाहपूर्ण, काव्यात्मक एवं ललित पदावली युक्त है। अपने निबंधों में उन्होंने लम्बे संश्लिष्ट वाक्यों की रचना की है। शीर्षकों की विचित्र रचना, विचार पल्लवन की अद्भुत प्रणाली और निबंध के प्रारंभ

करने का अनूठा शिल्प उनके निबंधों में दृष्टिगोचर होता है । वर्णनात्मक, विचारात्मक, आदि विविध शैलियों के प्रयोग उनके निबंधों में मिलते हैं । निष्कर्षतः कुबेरनाथराय जी ने निबंध जैसी विधा को जितना कलात्मक आयाम दिया है उसकी जितनी अधिक प्रशंसा की जाय वह कम होगी ।

पं० विद्यानिवास मिश्र हिन्दी ललित निबंध परम्परा के श्रेष्ठ निबंध शिल्पी हैं। आपने अपने निबंधों में वर्तमान समस्याओं और साहित्यिक नवीनताओं पर विचार प्रस्तुत किए हैं । अनुभूति और चिन्तन की सरसता ही इनके निबंधों की विशिष्टता है । वे पूर्ववर्ती परंपरा, वर्तमान जीवन स्वरूप एवं आत्मानुभूति को ऐसी आत्मीयता से प्रकट करते हैं कि पाठक उसे अपना ही समझता है और लेखक की भी सफलता सिद्ध होती है । राजनीतिक, साहित्यिक और सामाजिक समस्याओं पर वे उपालम्भ, व्यंग्यात्मक तथा विनोदात्मक ढंग से विचार करते हैं । उन्होंने प्रकृतिपरक निबंध लिखे हैं तथा लोकजीवन की सुन्दर झांकी उनके निबंधों में मिलती है । मैंने सिल पहुंचाई संस्मरणात्मक तेवर पर लिखे गए निबंध हैं। इनके कई निबंध पत्रात्मक शैली को आधार ~~मम~~ बनाकर भी लिखे गए हैं तो कई में बुद्धिजीवी वर्ग की सम-सामयिक ज्वलन्त समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है। ललित निबंधों को बुलन्दी स्तर पर पहुंचानेवाले सिद्धहस्त कलाकारों में उनका नाम अग्रगण्य है। कल्पना एवं अनुभव के द्वारा आपने निबंधों में ऐसी बातें कही हैं जो हमारे जनजीवन की हैं। `छितवन की छांह` में छितवन की उपेक्षा का वर्णन है, जिसके महत्व और उपयोगिता पर किसी ने दृष्टिपात तक नहीं किया- साथ ही साथ पश्चिम के अंधानुकरण को भी अनुपयुक्त बताया है और शैली की अपेक्षा जीवन की द्रुतशीलता की ओर देखने का नम्र निवेदन इनके निबंधों में है । इसी प्रकार `नेह का सिंगार`, `हरसिंगार` है जो उपेक्षित है पर यथार्थ की भूमिका है और सात्विक प्रेम की असली पहचान भी । `गउचोरी` में देश के पतन की ओर ले जाने वाले वर्ग की ओर व्यंग्य है और लगे हाथों अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

के उन प्रतिक्रियावादी तत्वों की ओर भी संकेत है। इस तरह 'गऊचोरी' में भूमिचोरी , राजनीति चोरी और साहित्य चोरी की विभीषिका पर आक्रोश प्रकट किया गया है । 'छितवन की छांह' अपने समग्र रूप में यह बताती है कि निबंधकार का भारत एवं भारतीयता से कितना लगाव है कितना नेह है । अपनी धरती के कुसुमों का मिश्र जी ने सजीव अलबम प्रस्तुत किया है। ऐसा भारतीय जन-जीवन का सुरभित चित्र समूह अन्यत्र दुर्लभ है । मिश्र जी ईश्वर, जीवन एवं मानव के प्रति आस्था रखनेवाले आशावादी लेखक हैं और जीवन में प्रफुल्लता एवं उल्लास के कलाकार हैं। प्राचीन भारतीय लोक संस्कृति के प्रति झुकाव इनके निबंधों में मिलता है तथा संस्कृत की तत्समता से गर्भित उनके निबंध हैं। निबंधों के कतिपय शीर्षक या निबंधों के बीच एकाध वेदों या उपनिषदों के सूत्र या वाक्य अति-सारगर्भित सिद्ध हुए हैं । अनुभूति और चिन्तन की वैयक्तिक सरसता ही इनके निबंधों की विशिष्टता है। वे वैयक्तिक परिवेश से दूर नहीं जा सके हैं। इस तरह उनके निबंधों के आधार विषयों में विविधता दृष्टिगोचर होती है। उनकी शैली का मूल स्वर काव्यात्मक होने के कारण तथा भाषा में सहजता, सरसता और रेशमीपन से उनके निबंधों में लालित्य की रमणीय छटा और मादकता परिलक्षित होती है। डा० शिवप्रसाद सिंह के मत से विद्यानिवास मिश्र शैली के सिद्धहस्त शैली-कार हैं------------- गद्य उनके लिए निकाब नहीं जीवन है- परिणामत: इनकी भाषा में आपको भोजपुरी संस्कारिता, शक्ति की प्रखर धारा, हिमालय की तलहटी में रहनेवाले व्यक्तित्व के उत्तुंग शृंग और संस्कृत में पले एक लांटी ब्राह्मण की वदान्यता के पुष्ट वैदुष्य और सबके उपर एक आधुनिक बुद्धिजीवी को अपने ही भीतर के देवता और दैत्य से निरन्तर युद्धरत रहने की सरगर्मी भी मिलेगी ।[१]

~~जैसे~~ ललित ~~निबंध~~ निबंधों में अज्ञेय शीर्षस्थान पर हैं, वे हिन्दी के एक

ऐसे सशक्त निबंधकार हैं जिन्होंने निबंध शिल्प को एक नया आयाम भी दिया है। अपेक्षाकृत हल्की मन:स्थिति में लिखे गए- ललित निबंधों में किसी गंभीर तत्व का प्रतिपादन उनकी निबंध कला की एक विशेषता है और कहीं- कहीं यह प्रतिपादित तत्व अपने आपमें इतना पूर्ण होता है कि यदि इसे सबद्ध निबंध से अलग करके प्रस्तुत किया जाए तो यह बताना कठिन होगा कि यह किस निबंध का अंश है ? भारतीय संस्कृति के प्रति भी उनका लगाव निरन्तर बना हुआ है तथा व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बंधों पर उनका सदैव ध्यान गया है। श्री रामचन्द्र तिवारी जी के अनुसार- उनके निबंध मन: स्थिति विशेष के रेखाचित्र जैसे लगते हैं तो कहीं चित्तभूमि पर टपक गए सघन विचार बिन्दु से। उनकी कोई उपरी पहचान नहीं है। उनकी एक ही पहचान है कि वे 'अज्ञेय' के अनुभव को रूपायित और संप्रेषित करते हैं। निबंधों में कविता की तरह प्रयोग किए हैं। पर सफल, 'गिलहरी' की चर्चा में जहां वह जंतु विज्ञान की तह में पहुंच जाते हैं वहां मानव की नैतिकता पर भी विचार करते हैं। 'गुणी से गुण की उद्भावना करने की, युक्ति की, तर्क की, कार्य-कारण परंपरा को समझकर कार्य का कार्यत्व और कारण का कारणत्व पहचानने की और सम्बंध का सम्बन्धत्व देखने की क्षमता मानवीय बुद्धि की विशेषता है और मानव बुद्धिमान है इसलिये वह नैतिक है, नीति का स्रोत हमें निरे सुखवाद में खोजना पड़े, यह आवश्यक नहीं। मानव की बुद्धि ही उसकी नैतिकता की प्रतिज्ञा है।' उनके निबंधों में विशेष प्रकार का लालित्य है- विशेषत: ऐसे निबंधों में जिन्हें उन्होंने स्वयं निजी या आत्मपरक निबंध कहा है। इस लालित्य का आधार है इनकी रागमूलकता। इसके अतिरिक्त निबंधों में उनकी मानसिक यात्रा के अनेक पक्ष उभरकर सामने आये हैं जो जितने उनके हैं उतने हमारे भी हैं। इन निबंधों में एक अत्यन्त सजग एवं संवेदनशील रचनाकार की आज के परिवेश के प्रति ऐसी रागदीप्त किन्तु खरी प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है जो हमारी चेतना को झंकृत कर हमें क्रियाशील होने की प्रेरणा देती है।

`आलवाल` में विविध भाषणों, वक्तव्यों, भेंटवार्ताओं तथा प्रश्नोत्तरों के लिखित रूप हैं । इनके भारतीय साहित्य की प्रकृति को समझने का प्रयास है। तो कुछ में लेखक की स्थिति और उसके वर्तमान परिवेश का विवेचन है तथा उनके कई निबंधों में आधुनिकता, समकालीनता तथा नए साहित्य सम्बंधित अन्य प्रश्नों की व्याख्या भी है। `लिखी कागद कोरे` के निबंध दो भिन्न मन:स्थितियों के साक्षी हैं और कुछ के विषय स्वयं अज्ञेय हैं । अज्ञेय ने अपनी जीवन यात्रा के क्रम में अनेक प्रकार के भावानुभावों का संग्रह किया है, भोगा है- और उनसे मुक्त हुए हैं । उनका `भवन्ती` निबंध संग्रह भोग और मुक्ति की सतत प्रक्रिया का आलेख है। संक्षेप में कहें तो अज्ञेय के गद्य विधान जिन्हें हम निबंध कहते हैं कहीं `डायरी` की मर्यादा में बंधे प्रतीत होते हैं। कहीं कहानी की, कहीं वे प्रश्नोत्तर रूप में लिखे गए हैं कहीं वार्तालाप के रूप में । कहीं भाषण की प्रवाहमयता में बंधे हैं तो कहीं विचारार्थ प्रस्तुत प्रपत्र की भूमिका से । हिन्दी के अतिरिक्त फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी, तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। कई भारतीय भाषाओं का भी उनको अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। कई भारतीय भाषाओं का भी उनको अच्छा ~~अभ्यास~~ अभ्यास है । इतना ही नहीं उन्हें एक जीवित भाषा की प्रकृति की परख है। अज्ञेय का निबंध शिल्प भी कम आकर्षक नहीं । इसमें सन्देह नहीं कि अज्ञेय ने हिन्दी निबंध साहित्य की विषय परिधि को व्याप्ति और उसके शिल्प को मन के अधिक गहरे स्तर को व्यक्त करने की क्षमता प्रदान की है मगर अज्ञेय ने कुछ और आगे बढ़कर विज्ञान, राजनीति, दर्शन, आधुनिक इतिहास बोध, मनोविज्ञान तथा विश्व साहित्य के अनेक नये पुराने सन्दर्भों को अपनी भावपरिधि में घेरने का प्रयास किया है । वे कहीं नितान्त घरेलू बातचीत के लहेजे में किसी पूर्व प्रसंग का हवाला देते हुए, कहीं विषय के बीजभाव के अंकुरित करने वाली किसी कविता पंक्ति को उद्धृत करते हुए, कहीं वर्ण्य विषय से भिन्न विषय छोड़कर विरोधाभास का चमत्कार उपस्थित करते हुए और कहीं सीधे वर्ण्य विषय को प्रस्तुत करते हुए वे अपने निबंधों का आरंभ करते हैं । हास्य और व्यंग्य की प्रवृत्ति अज्ञेय के

निबंधों को सरस और रमणीय बनाती है । अज्ञेय का व्यंग्य हास्यपरक एवं सुरुचि संपन्न है। उनके निबंधों में कहीं कालिदास और भवभूति की कोई सूक्ति उद्धृत रहती है तो कहीं वेद का कोई मंत्र, न्याय, वेदान्त या अन्य किसी दर्शन का कोई पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त रहता है कहीं पुरातत्व क का कोई सन्दर्भ । अज्ञेय एक सफल प्रयोगशील निबंधकार हैं। यद्यपि उनका निबंध साहित्य अल्प है लेकिन प्रयोगों की बहुलता में आधुनिक हिन्दी निबंध साहित्य को जिन नयी दिशाओं का संकेत दिया है साहित्यिक दृष्टि से अभूतपूर्व दिशाएं हैं। जिनकी ओर आज नया साहित्य उन्मुख है । शैली की दृष्टि से अज्ञेय ने सूत्र व्याख्या शैली, संलाप, वार्तालाप और प्रश्नोत्तर आदि शैलियों को अपनाया है । जहां तक सूत्र व्याख्या शैली का प्रश्न है अज्ञेय के निबंधों में सूत्रों की संख्या पृथक और स्वतंत्र हैं। एक में सूत्र विषयाधीन है जबकि दूसरे में सूत्र ही प्रमुख है। इस प्रकार संलाप शैली में भी अपनी प्रयोगात्मक प्रगति का सफलतापूर्वक परिचय दिया है । अज्ञेय ने नवीन को प्राचीन में जिस प्रकार अभिव्यक्त किया है वह अज्ञेय की प्रयोगात्मक प्रगति का बहुत बड़ा प्रभाव है ।

इन प्रमुख ललित निबंधकारों के अतिरिक्त अनेक ऐसे निबंधकार हैं जिन्होंने ललित निबंध लिखे हैं । ऐसे ही ललित निबंधकारों में कन्हैयालाल मिश्र `प्रभाकर` का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है । जिन्होंने अपने निबंधों क और शैली के माध्यम से इस विधा को उदात्त स्वरूप दिया । संस्मरण लिखने की कला में वे सिद्धहस्त हैं । करुणा और व्यंग्य के मिले-जुले चित्र उनके निबंधों और संस्मरणों में मिलते हैं। `दीप जले शंख बजे` प्रभाकर जी के सजीव -सशक्त एवं सप्रवाह भाषा में लिखे हुए रेखाचित्रों का संग्रह है । इन चित्रों में मानव जीवन के सत्यों का बारीकी से अध्ययन किया गया है । रेखाचित्रों में मानव जीवन के सत्यों का उद्घाटन मात्र कराना ही मिश्र जी की कुशल लेखनी द्वारा संभव है । `माटी हो गई- सोना` में बल और बलिदान की जीवन चेतना देनेवाले अपार चित्र हैं। इनमें प्राचीनकाल से लेकर

आधुनिक राष्ट्रीय महापुरुषों के हृदय स्पर्शी रेखाचित्रों का संग्रह है जिनमें वर्णित कथाओं को लेखक ने खून से लिखा है। इतना ही नहीं लेखक ने राष्ट्रहित के लिए जीवन की बलि लगा देनेवाले शहीदों के रेखाचित्र भी प्रस्तुत किए हैं। जीवन की सामान्य से सामान्य घटनाओं को एक धागे में कुशलता के साथ पिरोकर लेखक ने उनके मूल्य को बढ़ा दिया है। 'बाजे पायलिया के घुंघरू' में ऐसे ही निबंध हैं। मानव-मन का परिष्कार एवं उनमें सद्वृत्तियों का आनयन यही मिश्र जी के रेखाचित्रों का उद्देश्य है। मानव जीवन की अच्छाइयों, बुराइयों तथा सुख-दु:ख को ऐसे रूप में प्रस्तुत किया गया है कि निबंध अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। यह पुस्तक गांधी-वादी दर्शन से प्रभावित है और मिश्र जी की प्रतिभा की साक्षी है। मिश्र जी की तीक्ष्ण अंतदृष्टि और मार्मिक सूझ सराहनीय है स्वतंत्रता संग्राम के सैनानी, क्रांतिकारी कर्मनिष्ठ पत्रकार बेनीपुरी जी शब्द के शिल्पी थे। अद्यतनयुग में संस्मरणात्मक निबंधकारों में इनका प्रमुख स्थान है। इनके निबंध यथार्थत: संस्मरण, रेखाचित्र तथा वैयक्तिकता के सुन्दर सम्मिश्रण हैं। बेनीपुरी जी के रेखाचित्र संस्मरणात्मक ही होते हैं। शब्दों के धनी एवं सिद्धहस्त कलाकार हैं। भाववेजी के शब्दों में वे शब्दों के जादूगर हैं। वे छोटे-छोटे वाक्यों से ही धरती के बेटे की भावनाओं को लेखनी से अमर रूप देते हैं। भावों की उमंग एवं भाषा का संयत स्वरूप एक मार्मिक प्रभावोत्पादन करते हैं। हां कहीं-कहीं यह उमंग अतिरंजित एक भी हो जाती है। 'लालतारा' उनके शब्द चित्रों का पहला संग्रह है। जो एक नये प्रभात का प्रतीक है। 'यह और वह' में गरीबी और अमीरी का चित्र है। 'हंसिया और हथौड़ा' एक प्रतीकात्मक चित्र है। शक्ति और कर्तव्य के ये दो प्रतीक हैं, कृषि और उद्योग के, प्रकृति और पुरुष के संसार रथ इन्हीं दो पहियों पर बढ़ा जा रहा है। एक पहिया भी गिर जाय तो यह रथ एक पग बढने का नहीं। 'मिल के पत्थर' बेनीपुरी जी के हृदयस्पर्शी रेखाचित्रों तथा संस्मरणों का संकलन है। छोटे-छोटे वाक्यों तथा भाव भरे शब्दों के चित्रात्मक प्रयोग से भाषा सजीव होकर व्यक्ति का सहज में ही चित्रांकन कर देती है। 'बापू की कुटिया' में निबंधकार ने चार मूर्तियों का निर्माण किया है।

कर्मवीर, क्रांतिकारी,ज्ञाता, कलाकार । कलाकारों, साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों आदि पर लिखे गये रेखाचित्र हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'मील का पत्थर' सिद्ध हुए हैं । बेनीपुरी जी चतुर पारखी जौहरी की भांति यत्र-तत्र,जहां कहीं भी पात्र मिले हैं उनमें अपनी कुशल लेखनी से पात्र का चित्र खड़ा कर देते है । विषय की विविधता और शैली का जितना अद्भुत चमत्कार बेनीपुरी जी में मिलता है उतना अन्यत्र नहीं । रेखाचित्रों को इतने साज-संवार के साथ गढ़कर दूसरा कोई व्यक्ति नहीं रखता । इनके निबंधों में शैलियां बदलती रहती है - कहीं संस्मरणात्मक, कहीं नाटकीयता और कहीं डायरी पर भाषा सर्वत्र सहज फुदकती चलती है, छोटे-छोटे भावभीने वाक्य पाठक को मुग्ध करते हैं । हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ शब्द चित्रकार के रूप में हम निःसंकोच श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी का नाम ले सकते हैं ।

बाबू गुलाबराय जी ने निबंध क्षेत्र में बहुत बड़ा काम किया है । वे पहले निबंधकार हैं फिर आलोचक । बाबू जी ने प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी प्रकार की मौलिकता दिखाई है । निबंध के क्षेत्र में भी उनकी कला मौलिक है । वस्तु निष्ठता उनके निबंध का धर्म है । गुलाब राय जी की निबंधकला का मूल आधार वस्तुनिष्ठता की प्रमुखता, बंधी-सधी वाक्य रचना, परिनिष्ठित शब्दावली, व्यवस्थित प्रतिपादन, नवीन ज्ञान सामग्री आदि हैं । उन्होंने निबंधों को एक नवीन शक्ति और सौन्दर्य प्रदान किया । बाबू जी ने वस्तु या बात का वर्णन करने के लिए शास्त्र, वेद,पुराण का भी उल्लेख किया है । साथ ही साहित्यिक क्षेत्र से हटकर वैधक तथा एलोपैथिक के उल्लेख को भी नहीं छोड़ा है । तथा उदाहरण में बिहारी तक पहुंच गये हैं ।और उन्हें भी इतिहास की घटना की भूमिका से जोड़ दिया है । बाबू जी ने अपने निबंधों में शब्दशक्ति का उन्मुक्त विवेचन किया है । शब्द शक्ति के निरूपण से उनके निबंधों में तारल्य और प्रभाव व्यंजकता का विधान हुआ है। उनके निबंधों में व्यक्तित्व की पूर्ण छाप है, चाहे वे विचारात्मक हों या वर्णनात्मक, भावात्मक हों या मनोवैज्ञानिक, आत्मपरक हो या आलोचनात्मक सर्वत्र उनके निबंधकार की स्पष्ट छाप

मिलैगी- स्पष्टता, स्वच्छता, सरलता, सजीवता, सुबोधता तथा तर्क संबद्धता उनके निबंधों की प्रमुख विशेषतायें हैं। 'मेरी असफलतायें' उनके आत्मपरक निबंधों का सफल उदाहरण है। इन निबंधों में जैसा निज का वर्णन और अंकन उन्होंने किया है वह उत्कृष्ट कोटि का है। इसमें उनका विनोद प्रिय व्यक्तित्व प्रस्तुत हुआ है। इसके अतिरिक्त संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति उनके निबंधों का प्रमुख गुण है। गुलाबराय जी ने व्यक्तिपरक निबंधों में कलात्मकता के साथ व्यंग्य विनोद का जो पुट दिया है वह प्रशंसनीय है। डा० नगेन्द्र के अनुसार 'अहंकार' की उग्रता से मुक्त भीनी गंध इनके ललित निबंधों की प्रमुख विशेषता है। उनके रेखाचित्र में शैली की वैयक्तिकता के साथ विषय में भी वैयक्तिकता होती है। उनके ठलुआ बल्ब' में हास्य व्यंग्यात्मक निबंध रेखाचित्रों के अधिक निकट हैं। 'मेरे नापितावार्य' सफल रेखाचित्र हैं। बाबू जी कवि दार्शनिक हैं। हास्य- व्यंग्य का चटपटा पुट उनके गंभीर विवेचनों को भी रोचक बना देता है। 'मेरे निबंध जीवन और जगत्' नामक प्रकाशित उनका संग्रह जिसमें वैयक्तिक निबंधों के अतिरिक्त व्यापार सम्बंधी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक तथा सांस्कृतिक निबंध शीर्षक के साथ लगे हुए शब्द---------जगत को सार्थक करते हैं। गुलाबराय का इन निबंधों के बारे में यह दावा है कि ये जीवन के निजी अनुभव एवं साधना से प्रसूत हैं। बाबू जी के इन निबंधों में हम स्पष्ट रूप से इनके अनुभवों की छाप पा सकते हैं। कटुतिक्त या मधुर अनुभव तो प्रत्येक प्राणी को जगत में होता ही है परन्तु गुलाबराय जी ने इन निबंधों में अपना चिन्तन, अपनी शैली तथा अपनी सहानुभूति प्रदान की है। उनके ये निबंध हमें उलझाते नहीं, स्पष्ट है कि लेखक स्वयं भी नहीं उलझा है। संस्मरणात्मक होने के नाते ही ये वैयक्तिक रेखाचित्र के अन्तर्गत आते हैं। 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ' जिसमें एकदम घरेलू तथा निजी बातों की चर्चा भी ऐसी शैली में की है कि मन रम जाता है। पूरा निबंध हास्य-व्यंग्य विनोद से भरा हुआ है। 'मेरा मकान' में निबंधकार ने आत्मपरक चर्चा की है। इसमें भी उनकी विनोदीवृत्ति स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त कचहरी के झमेले

एवं फैशन आदि पर सुन्दर व्यंग है। उनके निबंधों में डाक्टरों, कम्यूनिस्टों, तथा बीमा एजेण्टों पर हल्के व्यंग्य हैं। शैली में मुहाविरे, लोकोक्तियां, तथा रामायण आदि के उदाहरणों के अतिरिक्त प्राप्त वचनों का पर्याप्त उपयोग इन्होंने किया है। इनके निबंधों की भाषा में यों तो सादगी है, कथा संचार का प्रवाह है, लेकिन कहीं-कहीं कृत्रिमता भी है। कहीं-कहीं लोकोक्तियों, अनावश्यक चेतावनियों, और उद्धरणों का कच्चा प्रयोग ग्राम्यता और बाजारूपन तक पहुंच जाता है। श्री वियोगी हरि ने अपने निबंधों में भावों और विचारों तथा आत्माभिव्यक्ति को स्थान दिया है। उनके निबंधों में हमें राष्ट्रीयता, देशप्रेम, समानता, स्वाधीनता वेदना आदि भावनाएं देखने को मिलती है। उनके निबंधों को पढ़ने मात्र से हम उनके सम्बंध में सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उनके निबंधों की भाषा भी प्रवाहपूर्ण तथा निर्मल है। जिसका एकमात्र कारण लेखक के हृदय की निज की भावुकता है। वे भक्त एवं सर्वोदयवादी हैं तथा सरलता, मधुरता एवं सुबोधता के माध्यम से इन्हीं प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति इनके निबंधों में हैं। इनके निबंधों की आत्म व्यंजना में गंभीरता है इसलिए कहीं-कहीं भाषा एवं भाव दोनों दुरूह भी हो गए हैं। ममता और आत्मीयता के साथ हलका व्यंग्य भी नवीन आकर्षण की अभिवृद्धि में सहायक बनता है। उनके निबंधों को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है जैसे वे किसी आत्मीय को उसके कर्तव्य के प्रति सचेत और उत्साहित कर रहे हों। जैसे गिरते हुए को संभलने का सहारा दे रहे हों। सम्बोधन और ललकार उनकी भाषा की विशेषताएं हैं। बड़ी जोशीली और घुटीली भाषा मिलेगी। इसके अतिरिक्त उनके निबंधों में व्यक्तित्व प्रधान निबंधों की सभी विशेषताएं हैं। परिचयात्मक शैली, बातचीत का सजीव प्रवाहपूर्ण आनन्द, सरल एवं आम वाक्य योजना, नाटकीयता के साथ वाक्यों की संक्षिप्तता, रोचक एवं रमणीय विषय निर्वाह उनके निबंधों की विशेषताएं हैं। समीक्षकों में निबंधकार एवं निबंधकारों में समीक्षक के रूप में श्री शांतिप्रिय द्विवेदी जी प्रस्तुत हुए हैं। उनके निबंधों में भाषा शैली में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट

श्राप है। मानवतावादी संवेदनशीलता के दर्शन हमें इनके निबंधों में होते हैं । द्विवेदी जी भारतीय संस्कृति और संस्कृत साहित्य के मर्मज्ञ हैं । व्यक्तिगत विचार, वेदनायें और अनुभूतियाँ ही उनके निबंधों का विषय है । वे आदर्श साहित्य और आदर्श समाज के ही समर्थक हैं । पौराणिकता के प्रति राग रखते हुए भी नवीनता से उन्हें घृणा नहीं बल्कि अनुराग है । वे नवीनता का पोषण करते हैं, परन्तु नवीनता मानवता की संहारक न बनकर सुधारक हो । उनका स्वच्छन्द व्यक्तित्व उनके निबंधों में मिलता है । साधारण सरल शब्दावली, सघुतम पदावली, छोटी वाक्यावली तथा विशुद्ध हिन्दी साहित्य के अनुसार निबंधों की रचना करना ही उनका गुण है । द्विवेदी जी बड़े विनोदी व्यक्ति हैं । उनका हास्य बड़ा शिष्ट है । व्यंग्य विनोद चुटीला साथ ही आकर्षक भी है । किसी बात को वे भाषा-शब्दों में बनाते हैं कि अपने आप दिमाग में गुदगुदी पैदा हो जाती है । वे साधारण विषय पर प्रचलित साधारण शब्दों- वाक्यों से उनमें विनोद की धारा प्रवाहित कर देते हैं । उनके निबंधों में तीन प्रकार की शैलियाँ देखने को मिलती हैं । भावात्मक, विवेचनात्मक और व्यंग्यात्मक। अत्यन्त भावुक क्षणों में जब वे जीवन जगत पर अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त करते हैं , अपने जीवन पर दृष्टिपात कर अपनी अनुभूतियाँ अंकित करते हैं वहाँ भावनात्मक आवेग और अंतर्मुखता के साथ भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं । इसी प्रकार जब साहित्यिक कृतियों, कृतिकारों का विश्लेषण करते हैं तब उनके साहित्यिक विश्लेषक ~~विवे~~ विवेचक के रूप में दर्शन होते हैं । और जब मौज में आकर विश्लेषक व्यंग्यात्मक ढंग से अपनी बात करते हैं तब उनकी सहजता के साथ शिष्ट आघात का आभास होता है। यहाँ पर उर्दू, अंग्रेजी, शब्दों के प्रयोग भी हुए हैं । निबंधों की पद्धति के लिए किसी भी साहित्य का अनुसरण उन्होंने नहीं किया है । वे सब स्वनिर्मित हैं । मौलिक प्रतिभा के कारण द्विवेदी जी ने हिन्दी साहित्य की मौलिक श्रीवृद्धि की है । आत्मानुभूतियों एवं आत्म दृष्टि से अलग उनके निबंधों का मूल्यांकन संभव नहीं ।

डा० शिवप्रसाद सिंह ने ललित निबंध लेखन की परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। विचारों के क्रमबद्ध विवेचन तथा लालित्य चेतना की संयोजना कर शिवप्रसाद सिंह ने ललित निबंधों के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग करके अपने मौलिक चिंतन का परिचय दिया है। उनका ललित निबंध संग्रह 'शिखरों का सेतु' में विविध प्रकार के निबंध दृष्टिगोचर होते हैं। जिनके कुछ संस्मरणात्मक एवं कथात्मक पद्धति में तो कुछ चित्रात्मक रिपोर्ताज पद्धति में भी लिखे गए हैं। 'पुष्प के अभाव' में शीर्षक निबंध के अंतर्गत निराला, चेखव, कामू जैसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय श्रेष्ठ व्यक्तियों के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में लिखे गए ललित निबंध हैं। इसके अलावा कई निबंध शिव-प्रसाद जी के व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत धारणाओं को उजागर करते हैं और कस्तूरी मृग भटकता रहा' लेखक के सर्जक कलाकार के रूप को उभारता है तथा आत्म कथ्य प्रधान होने के कारण सच्चे अर्थों में ललित निबंध कहा जाता है। आचार्य ललिता-प्रसाद 'सुकुल' का इनसे' ललित निबंध संग्रह है। इस संग्रह के निबंधों में जो कुछ कहा गया है तथा जब जो कुछ कहा गया है वह महत्वपूर्ण प्रश्नों अथवा समस्याओं के सम्बंध में सुझाव के रूप में अपनों के बीच कहा गया है। हिन्दी साहित्य में हिंदी भाषा और बोली का महत्व, भी समझाया गया है। डा० इन्द्रनाथ मदान हिन्दी में श्रेष्ठ ललित निबंधकार के रूप में प्रचलित हैं। उनके द्वारा लिखित विशुद्ध वैयक्तिक निबंधों में उनके जीवनचरित, स्वभाव, चिन्तन दृष्टियाँ, दुखदर्द और सम्मान अपमान के क्षणों की प्रतिक्रियायें हैं। इसमें न तो चिंतन प्रधान है, न दर्शन और न विद्वता। बल्कि एक आत्मीय मित्र, एक आत्मीय स्वजन की खुली व्यंजनाएं हैं जिनमें न दुराव है न कृत्रिमता। ये निबंध प्राय: लेखक के जीवन प्रसंगों से अधिक सम्बंधित है। जहां वह एक घटना को लेकर अपने जीवन एवं जगत की प्रवृत्तियों पर अपनी प्रतिक्रियायें व्यक्त करने लगता है। अनेक निबंध जीवन ~~अन्र~~ घटनाओं एवं प्रमुख प्रसंगों का परिचय देते हैं। इसमें हमें आत्मकथा और आत्मचरित का स्वरूप देखने को मिलता है। बातचीत की सहजता हमें उनके निबंधों में मिलती है। 'मैं' के माध्यम से निजता' का प्रस्तुतीकरण इनके निबंधों का प्रमुख गुण है। सर्वत्र

का निजत्व स्पष्ट झलकता है । उनके निबंधों में न तो उर्दू-फारसी का दबाव है और न ही संस्कृत निष्ठता का तनाव । सीधी-सरल भाषा, सामान्य परिचित शब्दावली, बिना उलझे वाक्य हैं तथा खड़ी बोली हिन्दी की प्रचलित शब्दावली इन निबंधों में प्रचुर है । शैली भी उनकी भाषा-भावों के अनुकूल प्रासादिक गुणों से युक्त हैं । न व्यर्थ की तार्किकता न उलझाव हों, न रहस्यात्मकता की गंभीरता । उनके निबंधों में उनकी भावुकता भी कम नहीं है । भावुकता तथा अनुभूति के बोल सजग और जीवन्त हैं । हिन्दी गद्य साहित्य में माथुर जी को संस्मरण और रेखाचित्र के क्षेत्र में पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई है । 'दस तसवीरें' शीर्षक ललित निबंध संग्रह में उच्चकोटि के चरित लेख हैं । ये प्रायः संस्मरण के से वातावरण से प्रारंभ होते हैं । व्यक्तित्व के भीतरी पर्तों को भेदकर रहस्यों का मार्मिक और सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में वे सिद्धहस्त प्रमाणित हुए हैं । उन्होंने अलग-अलग व्यक्तियों के व्यक्तित्व जैसे कि प्रोफेसर, मास्टर, कवि, संगीतज्ञ आदि चित्रित किए हैं । इन चित्रों में जीवन चरित की तटस्थता, संस्मरण शैली की रोचकता तथा रेखाचित्र कला का कौशल समान रूप से देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त इनमें जीवन कथा का विकास और ~~ब~~ चरमोत्कर्ष, भावनाओं की कशिश और ढीला रगों का उद्रेक और परिणति इन सभी का कम या अधिक मात्रा में समावेश हुआ है। इन जीवन कथाओं में समाज के विविध रूप प्रतिबिंबित हैं। निबंध संग्रह के अंत में अपने पिता लक्ष्मीनारायण माथुर का जीवन चरित भी चित्रित किया है जिसमें उनको एक आदर्श शिक्षक तथा हैडमास्टर के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

विवेकीराय ने ललित गद्य लेखक के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त की है । 'फिर बैतलवा डाल पर' निबंध संग्रह में सरस, सरल तथा प्रसन्न शैली में ललित गद्य लेखन का प्रवाहपूर्ण, प्रभावोत्पादक, तथा प्रसादगुण संपन्न रूप देखने को मिलता है । इनमें अलग-अलग पात्रों जैसे कि नेता, अधिकारी, रईस, विधायक, अध्याप~~कर्मचलन-है-~~। छात्र, कवि, पेटू, कंजूस, अन्धभक्त आदि पर लेखक ने व्यंग्य विनोद किया है ।

कथाकार अपने को ही समसामयिक व्यक्तियों, संस्थाओं, और स्थितियों में इस प्रकार विनियुक्त करता है कि उपहास का केन्द्र वह स्वयं बन जाता है। अर्थात् वह भोक्ता रूप में उपस्थित होता है तथा व्यंग्य सम्बंधी ऐसे कला संदर्भों को उपस्थित करता है जो व्यंग्यों को गंभीरता प्रदान करता दिखायी देता है। इसके अतिरिक्त निबंधकार गांवों की अक्षुण्ण प्राकृतिक वैभव का बड़ी सार्थक एवं प्रसन्न भाषा में अंकन करता है। भगवतशरण उपाध्याय भारतीय संस्कृति के आख्याता हैं। इन्होंने 'सांस्कृतिक निबंध' शीर्षक से उत्कृष्ट कोटि का ललित निबंध संग्रह हिन्दी साहित्य को दिया है। संस्कृत की खंडनमण्डन पद्धति तथा अधिकरण पद्धति पर ये प्राय: निबंध रचना करते हैं। 'रिपोर्ताज' लिखने में उन्होंने अपनी निजता को अधिक स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया है। 'हंस' में वे काफी समय तक लिखते रहे। सांस्कृतिक विषयों को लेकर चलनेवाले निबंधकारों में उनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विविध समस्याओं को उनके व्यापक और अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ में देखने की चेष्टा की है तथा इतिहास की प्रक्रिया को उन्होंने आधुनिक ढंग से देखना चाहा है। डा० धर्मवीर भारती का भी ललित निबंधकार के रूप में एक विशिष्ट स्थान है। 'कहनी-अनकहनी' शीर्षक निबंध के अंतर्गत इन्होंने अनेक छोटे-छोटे टिप्पणीनुमा निबंध लिखे हैं। इन निबंधों के अतिरिक्त अनेक निबंध ~~अस्वसन~~ मध्यम एवं दीर्घ आकारों में है। टिप्पणीनुमा छोटे-छोटे निबंधों की प्रकृति एक छोटी खबर : बड़ा सन्दर्भ टिप्पणी के ढंग की है इसमें तात्कालिक घटनाओं के बहाने अनेक बुनियादी बातों पर विचार किया गया है। विषय की दृष्टि से निबंधों में वैविध्यता है। इन विषयों में एक महत्वपूर्ण विषय भाषा से सम्बंधित है। हिन्दी- उर्दू की भाषा समस्या से अधिक कठिन समस्या हिन्दी है अंगरेजी की भाषा समस्या है। आज भारत में अंग्रेजी भाषा ने उच्च स्थान और शासन की भाषा के रूप में अधिकार जमाये रखा है। भारती जी ने अपने 'कहनी-अनकहनी' निबंध संग्रह में यह स्पष्ट करने का यत्न किया है कि किस प्रकार ज्ञान की भाषा अंग्रेजी आम जनता को अज्ञानी बनाए रखने का साधन बन गई है। इस भाषा के अतिरिक्त भारती ने साहित्य की अनेक समस्याओं

का विवेचन अपने निबंधों में किया है आधुनिक साहित्य में कुंठा को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जा रहा है उसके सम्बंध में लिखा है। भारती जी ने 'ठेले पर हिमालय' शीर्षक निबंध संग्रह में साहित्य, साहित्येतिहास एवं साहित्यालोचन के क्षेत्र की विकृतियों की मीठी चुटकियां लेते हुए निंदा की है। दृश्य काव्य के सम्बंध में भारती जी ने अपने विचार अनेक स्थानों पर व्यक्त किए हैं। 'रामायण : बतर्जे पैरठ' निबंध में सुरुचिपूर्ण रंगमंच के विकास पर बल दिया है। भाषा तथा साहित्य के अतिरिक्त राजनीति पर भी विचार किए हैं। उनकी दृष्टि में सच्ची आजादी तभी सम्भव है जबकि नागरिकों के ~~चित्त-मन~~ चित्त भय से मुक्त हो। शैली की दृष्टि से उनके निबंध सफल हैं। उर्दू शब्दों का प्रयोग उन्होंने काफी किया है। कहीं-कहीं हिन्दी के साथ उर्दू शब्दों का अनावश्यक प्रयोग भी इन्होंने किया है। उनकी भाषा पर अंग्रेजी का प्रभाव भी देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त निबंधों में यथाप्रसंग हास्य-व्यंग्य और विनोद के प्रयोग हैं। 'यू०एन०ओ० में हिन्दी पर मुकदमा' 'कहानी-बाजार-रहस्य' आदि व्यंग्यपूर्ण निबंध हैं। उनके इन ललित निबंधों में श्रद्धांजलियों और मृत्युलेखों का विशिष्ट स्थान है। भारती जी ने निराला की मृत्यु पर 'संत मुए का रोइए' शीर्षक लेख लिखा है। निराला उनके प्रिय साहित्यकार हैं। निराला के सम्बंध में एक और निबंध 'बसन्त पंचमी, संसद का प्रांगण और निराला की याद' लिखा है। 'अपनी ही मौत पर' यह मृत्युलेख इन्होंने लिखा है। इन मृत्यु लेखों के अतिरिक्त भारतेन्दु जयन्ती के अवसर पर 'मैं चांद के कलंक को प्यार करता हूँ' शीर्षक श्रद्धांजलि लेख भी लिखा है। इन्होंने कई सुन्दर संस्मरण भी लिखे हैं। संस्मरणों में उनके व्यक्तित्व का विचारपक्ष काफी उभरकर सामने आया है। यात्रा संस्मरण तथा शब्द-चित्र ~~क~~ भी प्रस्तुत किए हैं। 'चौक, चिडिया और सड़क की लालटेन' उनका शब्दचित्र है।

निष्कर्षरूप से कहा जा सकता है कि ललित निबंध विविध आयामी हैं और उसका विषाय फलक इतना व्यापक है कि उसे भिन्न-भिन्न विषय-सारणियों में विभक्त करना बहुत कठिन कार्य है। सचमुच ललित निबंध हिन्दी साहित्य को समृद्धि प्रदान करते हुए अपनी निबंध रचनाओं के मधु-अमृत से समग्र हिन्दी जगत को सिंचित कर रहे हैं और करेंगे। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ललित निबंधों के विकास की उज्ज्वल संभावनाएं हैं।

--

निबंधकारों की मौलिक कृतियां

१- कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	--	बाजे पायलिया के घुंघरू, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे, महके आंगन चहके द्वार, जिन्दगी मुसकायी ।
२- कुबेरनाथ राय	--	प्रिया नीलकंठी, पर्णमुकुट, विषादयोग, गंधमादन, रस आखेटक, निषाद बांसुरी, महाकवि की तर्जनी,
३- डा० गुलाबराय	--	मेरी असफलताएं, मेरे निबंध जीवन और जगत, फिर निराशा क्यों ?
४- जगदीशचन्द्र माथुर	--	बोलते क्षण, दस तसवीरें ।
५- धर्मवीर भारती	--	कहनी-अनकहनी, ठेले पर हिमालय, पश्यन्ती ।
६- हजारीप्रसाद द्विवेदी	--	अशोक के फूल, कल्पलता, आलोकपर्व, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क ।
७- विद्यानिवास मिश्र	--	तुम चन्दन हम पानी, छितवन की छांह, आंगन का पंछी और बनजारा मन, कदम्ब की फूली डाल ।
८- वियोगी हरि	--	अंतर्नाद, ठंडे छींटे, भावना ।
९- विष्णुकांत शास्त्री	--	कुछ चन्दन की कुछ कपूर की ।
१०- विवेकीराय	--	फिर बैतलवा डाल पर, खून के धब्बे इतिहास के पृष्ठों पर ।
११- भगवतशरण उपाध्याय	--	सांस्कृतिक निबंध
१२- श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी	--	गेहूं और गुलाब, माटी की मूरतें, मील के पत्थर।
१३- 'अज्ञेय' सच्चिदानंद वात्स्यायन	--	आत्मनेपद, लिखि कागद कोरे, भवन्ती-सरस्वती, सब रंग कुछ राग ।
१४- शांतिप्रिय द्विवेदी	~~चित्र~~	चित्र और चिंतन, धरातल ।
१५- शिवप्रसाद सिंह	--	कस्तूरी मृग, वतुर्दिक, शिखरों का सेतु ।
१६- आचार्य ललिताप्रसाद 'सुकुल'	--	'इनमें' ।

- सहायक हिन्दी ग्रन्थ सूची -

१- अंग्रेजी साहित्य का इतिहास -- जगदीश बिहारी मिश्र

२- आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका-- डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

३- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी-
(व्यक्तित्व और कृतित्व) -- कुमारी पी० वासवदत्ता

४- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -- शिवनाथ

५- आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास-- श्री कृष्णलाल

६- आधुनिक हिन्दी साहित्य -- नंददुलारे बाजपेयी

७- आधुनिक हिन्दी गद्य और गद्यकार. -- पी० जैकब जार्ज

८- आचार्य शुक्ल का समीक्षा सिद्धांत-- डा० रामलाल सिंह

९- आधुनिक हिन्दी साहित्य एक दृष्टि-- प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त

१०- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -- श्री शिवनाथ एम० ए०

११- आकलन और समीक्षा -- डा० संसारचन्द्र

१२- आदर्श निबंध -- डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

१३- काव्य के रूप -- डा० गुलाबराय

१४- काव्य शास्त्र -- डा० भगीरथ मिश्र

१५- काव्य, कला तथा अन्य निबंध -- जयशंकर प्रसाद

१६- गद्यमंजरी -- विश्वनाथप्रसाद मिश्र

१७- गद्य-साहित्य का उद्भव और विकास-- डा० शंभूनाथ पांडेय

१८- गुलेरी ग्रंथ -चन्द्रधर शर्मा गुलेरी -- कृष्णानन्दन

१९- निबंधकार गुलाबराय -- देवेन्द्रकुमार जैन

२०- निबंधकार बालकृष्ण भट्ट -- डा० भगीरथ मिश्र

२१- निबंध संग्रह -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

२२- निबंध और निबंध -- डा० इन्द्रनाथ मदान

२३- निबंध शैलर -- महेशचन्द्र शर्मा

२४- निबन्ध मानस -- ललित विलोचन शर्मा
२५- निबंध नवनीत -- लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
२६- भट्ट निबंधावली देवीदत्त शुक्ल
२७- भारतेन्दु के निबंध -- डा० केसरीनारायण शुक्ल
२८- भारतेन्दु युगीन निबंध साहित्य -- गंगावख्श सिंह
२९- भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका , -- डा० नगेन्द्र
३०- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र -- डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
३१- समीक्षात्मक निबंध -- डा० विजयेन्द्र स्नातक
३२- साहित्य विवेचन -- सुमन और मलिक
३३- समीक्षा शास्त्र -- आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
३४- साहित्यिक निबंध -- डा० गणपति चंद्र गुप्त
३५- समीक्षा शास्त्र -- डा० श्यामसुन्दरदास
३६- साहित्य निबंधावली- -- राहुल सांकृत्यायन
३७- साहित्य और सिद्धांत -- डा० सत्येन्द्र
३८- साहित्यानुशीलन -- शिवदानसिंह चौहान
३९- साहित्य का साथी- -- हजारीप्रसाद द्विवेदी
४०- साहित्य, शोध समीक्षा -- डा० विनयमोहन शर्मा
४१- हिन्दी साहित्य का इतिहास -- रामचन्द्र शुक्ल
४२- हिन्दी साहित्य के निबंध और निबंधकार -- डा० गंगाप्रसाद गुप्त
४३- हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन -- डा० मु०व०शहा
४४- हिन्दी निबंध का विकास -- डा० ओंकारनाथ शर्मा
४५- हिन्दी गद्य के निर्माता बालकृष्ण भट्ट-- डा० राजेन्द्र शर्मा
४६- हिंदी गद्य का निर्माण -- चन्द्रबली पांडेय
४७- हिंदी का गद्य साहित्य -- रामचन्द्र तिवारी

४८- हमारे लेखक -- राजेन्द्रसिंह गौड़
४६- हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष -- शिवदानसिंह चौहान
५०- हिन्दी निबंधकार -- जयनाथ नलिन
५१- हिंदी साहित्य में निबंधकार -- प्रो० ब्रह्मदत्त शर्मा
५२- हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियां -- प्रो० शिवकुमार
५३- हिंदी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास -- डा० ब०ल०कोतमिरे
५४- हिंदी गद्यकार और उनकी शैलियां -- रामगोपाल सिंह चौहान
५५- हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास-- देवीशरण रस्तोगी
५६- हिंदी साहित्य और ~~बस~~ बीसवीं - शताब्दी -- आचार्य नंददुलारे बाजपेयी
५७- हिंदी के वैयक्तिक निबंध -- श्री वल्लभ शुक्ल
५८- हिंदी निबंध -- जगन्नाथप्रसाद शर्मा
५९- हिंदी निबंध और निबंधकार -- श्री ठाकुर सिंह
६०- हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास -- रामबहोरी शुक्ल एवं मिश्र
६१- हिन्दी निबंधकार बालकृष्ट भट्ट -- गोपाल पुरोहित
६२- हिन्दी का सामयिक इतिहास -- विश्वनाथप्रसाद मिश्र
६३- हिन्दी साहित्य कोष -- डा० धीरेन्द्र वर्मा
६४- हिन्दी साहित्य चिन्तन -- इन्द्रपाल सिंह
६५- हिन्दी साहित्य -- भोलानाथ
६६- हिंदी साहित्य और बीसवीं शताब्दी-- आचार्य नंददुलारे बाजपेयी
६७- हिंदी साहित्य के निर्माता -- शांतिप्रिय द्विवेदी